चहकने की ललक

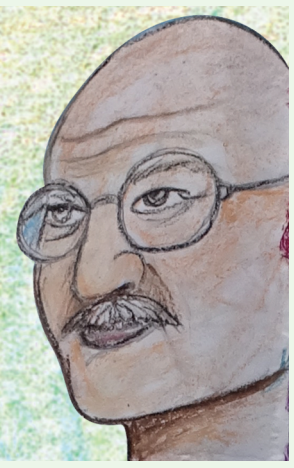

अंक – सोलह
सितंबर 2019 – दिसंबर 2019

परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 08434170118

तक्षशिला

बाल संवाद

प्यारे दोस्तो,

मैं हुँ चहकने की ललक इस बार अंक–16 में मेरे बाल लेखकों ने मेरे लिए मेरे बारे में बहुत अच्छा लिखा है, इससे पता चला है कि मुझसे मिलने के बाद इन बाल लेखकों में काफी कुछ बदलाव हुआ है। इस बार तो मेरे, प्यारे लेखकों ने मुझे खुद से तैयार किये हैं, सर्व प्रथम 2014 में मुझे प्रकाशित किया गया, जिसमें मेरे बाल लेखकों ने अपनी रचना को प्रदर्शित किये। उस दरमियाँ उन्हें बेहद खुशी हुई और लगातार मेरे लिए अपनी रचना लिखते रहे आशा करता हूँ कि आगे भी ऐसे ही अच्छा लिखेंगे। यह परिवर्तन बाल अखबार सभी बच्चों का अखबार है। जिसमें बच्चे अपनी–अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते हैं।

आपका साथी मैं
चहकने की ललक

चुटकुले

दो दोस्त थे पहले दोस्त ने कहा मुझे फल इतने अच्छे लगते हैं कि मैं कभी–कभी बिना छिले ही खा जाता हूं।
दुसरे दोस्त ने कहा तो लो यह नारियल खाओ।

अमन कुमार, वर्ग–7, रुईया

बाल पथिक
आयुष पाण्डेय
कक्षा–7
गोठी

अपनी बात

मुझे चिका दुरी खेल बहुत पसंद है, हमलोग एक गुची बनाते है, उसके बाद हमलोग एक गुची में एक लड़की लात रखकर तब एक–दुसरे से हाथ जोड़ा कर तब खेलते है, तब दुसरी टीम गोल बनाकर रहते हैं, तभी जो गुची में से लात मारते है, तभी जिसके पर लग जाता है तो उस टीम के आदमी आउट हो जाता है। इसी तरह फिर दुसरे टीम के लोग खेलते है। सभी एक दुसरे टीम को आउट करने में लग जाते है।

खातून , कक्षा 5, ग्राम बाबु के भटकन

पहेली

सीधा करो तो पता चले।
उल्टा करके ताप चढ़े।

छुने में शीतल, सुरत है।
लुभानी रात में मोती,
दिन में पानी

(ओस) ,(नाप)

कृति कुमारी
बड़हुलिया
हात्ता
कक्षा–6

मारो तो डण्डा, खाओ तो मिठाई
हमने वह अपने, खेत में उगाई।

पानी से पैदा होता है।
पानी में मर जाता है।
भोजन से तो इसका मैया
बड़ा ही गहरा नाता है।

(नमक) ,(गन्ना)

प्रिया कुमारी, कक्षा–7,
बाबु के भटकन

गाँव की कहानी — कहानी

एक छोटे से गाँव में एक गरीब परिवार था, उस परिवार में रामु और उसके बीवी सीता उसके बेटे चिंटू के साथ रहते थे, उसी गाँव में एक तोता भी रहता था, रघु वह किस्मत का धनी था, जहाँ जाता वहाँ किसी भी चीज की कमी नही पड़ती थी, एक दिन रघु उड़ते–उड़ते उस गरीब परिवार के घर गया, रघु सोचता है अरे वाह लगता है, यहाँ आज बहुत अच्छा खाना मिलेगा मै पेट भरके खाऊँगा। वो एक कटोरे में रखे अमरुद देखता है, अरे वाह अमरुद मुझे बहुत पसंद है मैं तो इसे भर पेट खाऊँगा रघु तोता अमरुद खाने लगता है तभी सीता रघु को अमरुद खाते देखती है, तो गुस्सा हो जाती है और वह उसे बोलती है – ''भाग यहाँ से ना जाने कहाँ से आ जाते हैं, मै तो परेशान हो जाती हूँ''। सीता के भगाने के बाद रघु चुपचाप से एक कोने में रहता है। धीरे–धीरे उस परिवार का तरक्की होने लगता है, एक दिन रामु सीता खाना खाते वक्त बाते करते हैं, आज–कल बहुत तरक्की हो रही है, काम भी अच्छा चलता है, रामु कहता है। इस पर सीता कहती है, सच कहा भगवान ऐसे ही हमपर मेहरबान रहे बेटा चिन्टू भी कहता है पिताजी मुझे खिलौना लाके दो ना मेरे सारे दोस्तों के पास है, रामु कहता है, जरूर लाऊँगा। सीता कहती है, कितने खुश है, सब मेरे परिवार को किसी की नजर ना लगे एक तरफ ऐसी बात होती है तो दुसरी तरफ रघु तोता भी अमरुद खाता रहता है। अमरुद खाया मजा आया तभी सीता रसोई में जाती है तो बहुत गुस्सा होती है।

– सुरुचि कुमारी, हाता, कक्षा 7

करने को कुछ

मेरा नाम प्रीति है, मै जीरादेई स्कूल में पढ़ती हूं। मुझे पेपर से अलग अलग चीजें बनाना बहुत अच्छा लगता है, मैं एक दिन घर पर एक कागज का बैग बनाई थी, और उस बैग में अपना कलम पेंसिल रखती हूं। इस प्रकार की चीजें बनाना मुझे काफी अच्छा लगता है।

प्रीति कुमारी, पथारदेई, कक्षा–6

कंचन कुमारी
वर्ग–7
नरायणपुर

आप बीती

जब मैं अपने दीदी के गाँव गई थी, तब मैं वहाँ रहना बहुत पसंद करती थी, मैं रोज स्कूल जाती थी, वहाँ बहुत अच्छे ढंग से पढ़ाई होती थी, सभी शिक्षक समय से स्कूल आते थे, सभी विषय अच्छे से पढ़ाते थे, और समझाते थे, वहाँ पढ़ने में मन लगता था। जब स्कूल में लंच होता था, तब मैं स्कूल से दीदी घर खाना खाने जाती थी, मेरी दीदी के गाँव में बहुत सारी लड़की थी जो मेरे साथ स्कूल जाती थी, और रोज समय से स्कूल जाती थी, कुछ मेरी सहेली बन गई थी, वह स्कूल जाने के लिए मुझे बुलाती थी।

मुन्नी कुमारी
घर गोंठी
कक्षा 7

आने वाला थीम

साफ–सफाई
बदलती दुनिया
आपदा प्रबंधन
मेरा परिवार

खुले से प्रश्न

क्या तुम दो सीधी लाइनों से इस चाँदको छह भागों में बांट सकते हो?

नीलू कुमारी, कक्षा–6
घर–पथारदेई

नीलू कुमारी
कक्षा–6
पथारदेई

चाँदनी कुमारी
कक्षा–5
घर–धर्मपुर

किरण कुमारी
कक्षा–7
बड़हुलिया

गाँधी जयन्ती निबंध

गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई. में हुआ था और वो हमारे देश के महापुरूष थे। उनकी माता का नाम पुतलीबाई था और पिता का नाम श्री कर्मचन्द था। गाँधी जी के बचपन का नाम मोहन था और वे हमारे देश के राष्ट्रपिता थे। जिन्होंने अपना काम बहुत ही मेहनत से किया।

ऐसे ही महापुरूष के प्रयत्न से हमारा देश आजाद हुआ। हम इस महापुरूष को सादर नमस्कार करते हैं। और ये पढ़ने के लिए इंग्लैंड देश गए थे अंग्रेजो ने गाँधी जी को कई बार जेल में भेजे किंतु वह डरे नहीं। गाँधी जी के तीन बंदर थे प्रथम बंदर कहते थे बुरा मत कहो, द्वितीय बंदर कहते थे बुरा मत सुनो, और तृतीय बंदर कहते थे कि बुरा मत देखो। गाँधी जी के तीनो बंदर जो कहते थे हम सभी को उसका पालन करना चाहिए।

नाम-सिमरन सिंह,
घर-नरेंद्रपुर, कक्षा-9

हमार बोली

हमारा गाँव में सड़क के सुविधा नईखे अउरी नाला के बहुत दिक्कत बा हमनी के कोचिंग पढ़े जानी सन त बड़ा दिक्कत होला, हमारा गाँव के लोग बाजार करे जाला लो त साईकिल और मोटर साईकिल से जाये में दिक्कत होला उतर के जाये के पड़ेला, रास्ता बड़ा उभड़-खाभड़ बा, नाला गाँव में ना भईला से सब लोग अपना घर के पानी सड़क या गढ़ा में बहावेलन लो अईसन हमारा गाँव के स्थिति बा सब लोग परेशान बा लेकिन केहु ई समस्या के समाधान खातिर एकरा बारे में ना सोचेला।

नीरज कुमार, घर-गोंठी, कक्षा-6

अपनी बात

शिक्षकों की कलम से

पर्व और हम :– हमारे देश में पर्व–त्योहार एक उत्सव का त्योहार हैं। जो समाज में एक दूसरे के साथ मेल–मिलाप की भावना को दर्शाता है। कुछ ऐसे भी त्योहार हैं। जो काफी प्रचलित है। जैसा की होली, दिपावली, छठ, ऐसे पर्व–त्योहार में लोग प्रदेश से घर आया करते थे अपने परिवार एवं साथ समाज के बीच बहुत ही धुम–धाम से मनाया करते थे मिल–जुलकर एक दूसरे को मदद करते तथा भाईचारे की भावना को बनाए रखते थे लेकिन आज की दुनिया में ये सब खत्म होते जा रहा है।

रफ्तार में बदलती दुनिया को देखकर लोगों की जीवन जीने की शैली भी साथ ही साथ बदलती जा रही है। लोग आसमान को छु रहे हैं। आने वाले समय में और भी बदलाव देखने को मिलेगा। पहले और आज की तुलना की जाय तो बहुत ही फर्क है। ये हम आप साथ ही साथ सारी दुनिया ही सोच सकती है।

रिंकू कुमारी, बालघर आँगन सहयोगी

पर्व–त्योहार निबंध

हमारे देश में अनेक पर्व–त्योहार प्रचलित हैं। जैसे– होली, दिपावली, रक्षा बंधन, दशहरा, तीज, बसंत पंचमी इत्यादि। हमारे देश में होली का दिन जब आता है तो हम सभी एक रंग का डिब्बा पहले से ही खरीद लेते हैं। और होली के दिन रंग खेलते हैं। होली में शाम के समय घूमने जाते हैं। बहुत मजा आता है। दिपावली में हमलोग पटाखा, चकरीया, महुआ इत्यादि खुब जलाते हैं। और हमें सावधानी रखनी चाहिए किसी को आग न लगे। दशहरा में तो हम कह ही नहीं सकते कि कितना मजा आता है। नव दिन हमलोग पुजा करने जाते हैं और अपनी सहेली के साथ मिठाई खाते हैं और साथ ही घुमते हैं। दुर्गा माँ का पुजा करते हैं ऐसे ही अन्य त्योहार हमारे देश में मनाया जाता है।

नाम आयुषी सिंह, घर–नरेंद्रपुर, कक्षा–8

मेरा गाँव लेख

मेरा गाँव बहुत ही अच्छा और हरा–भरा है, मेरे गाँव में एक नदी है, नदी के चारों तरफ हरे–भरे पेड़–पौधे हैं, नदी के आस–पास खेत में फसले लहराती है, मेरे गाँव के बीच, एक स्कूल है, जहाँ बहुत भारी मेला लगता है, गाँव के सभी लोग मेले में जाकर मस्ती करते हैं, झुल्ला झुलते हैं, जलेबी, चाट, पकौड़े भी खाते हैं। गाँव में एक बाजार भी लगता है, जो सप्ताह में एक दिन शनिवार के दिन लगता है, सभी लोग सब्जी इत्यादि चीजे सस्ते दामों में खरीद कर ले जाते हैं। इसके अलावे गाँव में हाथी, बैलगाड़ी भी है। मेरे गाँव के लोगों का व्यवहार बहुत अच्छा है।

निधि कुमारी यादव,
घर–पथारदेई, कक्षा–6

खेल-कुद अपनी बात

कबड्डी में हम टीम बाँट कर खेलते हैं। जैसे कि दस टीम इधर और दस टीम उधर यानी एक टीम में दस लोग और दूसरे टीम में दस लोग रहते हैं। उसके बाद खेल शुरू करते हैं। एक आदमी कबड्डी बोलते हुए दुसरे टीम में जाता है दुसरे टीम के लोग उस आदमी को पकड़ने की कोशिश करते हैं, फिर दुसरे टीम के लोग कबड्डी बोलते हुए पहली टीम में जाते हैं और पहले टीम के लोग पकड़ने की कोशिश करते हैं एवं जो कबड्डी बोलते हुए आता है, वह छुकर भागने की कोशिश करते हैं इसी तरह खेल में लोग आउट हो जाते हैं एवं कोई टीम जीत जाती है कोई हार जाती है।

आईशा खातुन, घर- बाबु के भटकन

कविता

मेरा गाँव है, बहुत बड़ा
खेती होती हरा भरा
फल–फूलों में बागों में
पक्षी की सुरीली आवाज
घर में सब मिलकर रहते,
एक दुसरे से नहीं झगड़ते।
रात कोदेखते तारे
दिन में जाते पढ़ने।
यह मेरा प्यारा गाँव
देखों तो कैसा है यार

नाम-आसू,
बड़हुलिया हात्ता
कक्षा-1

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित। सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स